(g) मरता हूँ इस आवाज़ पे हरचन्द सर उड़ जाय
जल्लाद को लेकिन वो कहे जायें कि "हाँ और"

जल्लाद = executioner

(h) लोगों को है ख़ुर्शीद-ए-जहाँ ताब का धोका
हर रोज़ दिखाता हूँ मैं इक दाग़-ए-निहाँ और

ख़ुर्शीद = sun, ताब = power/courage, निहाँ = hidden

(i) लेता, न अगर दिल तुम्हें देता, कोई दम चैंन
करता, जो न मरता कोई दिन, आह-ओ-फ़ुग़ाँ और

फ़ुग़ाँ = clamour

(j) पाते नहीं जब राह, तो चढ़ जाते हैं नाले
रुकती है मेरी तब'आ तो होती है रवाँ और

नाले = lamentation, तब'आ = temperament

(k) हैं और भी दुनिया में सुख़नवर बोहोत अच्छे
कहते हैं कि "ग़ालिब" का है अन्दाज़-ए-बयाँ और सुख़नवर = poet

(i) या शब को देखते थे कि हर गोशा-ए-बिसात
दामान-ए-बाग़बान-ओ-कफ़-ए-गुल-फ़रोश है

गोशा = corner, बाग़बान = gardener, कफ़ = sleeve, गुल-फ़रोश = florist

(j) लुत्फ़-ए-ख़िराम-ए-साक़ी-ओ-ज़ौक़-ए-सदा-ए-चंग
ये जन्नत-ए-निगाह वो फ़िर्दौस-ए-गोश है

ख़िराम = speed, ज़ौक़ = taste, सदा = sound, चंग = lute, फ़िर्दौस = paradise, गोश = ear

(k) या सुभ दम जो देखिये आकर तो बज़्म में
नै वो सुरूर-ओ-सोज़ न जोश-ओ-ख़रोश है

सुरूर = pleasure, सोज़ = passion/heat

(l) दाग़-ए-फ़िराक़-ए-सोहबत-ए-शब की जली हुई
इक शम्मा रह गई है सो वो भी ख़ामोश है

फ़िराक़ = separation, सोहबत = company

(m) आते हैं ग़ैब से ये मज़ामीं ख़याल में
"ग़ालिब", सरीर-ए-ख़ामा नवा-ए-सरोश है

ग़ैब = hidden/mysterious, मज़ामीं = topics, सरीर = scratching sound made by a pen,
ख़ामा = pen, नवा = sound, सरोश = angel

---

37. (a) है बस कि हर इक उनके इशारे में निशाँ और
करते हैं मुहोब्बत तो गुज़रता है गुमाँ और

गुमाँ = doubt/suspicion

(b) यारब ! वो न समझे हैं न समझेंगे मेरी बात
दे और दिल उनको, जो न दे मुझको ज़ुबाँ और

(c) आब्रू से है क्या उस निगाह-ए-नाज़ को पैवन्द
है तीर मुक़र्रर मगर उसकी है कमाँ और

आब्रू = eyebrow, पैबन्द = patch

(d) तुम शहर में हो तो हमें क्या ग़म ? जब उठेंगे
ले आयेंगे बाज़ार से जाकर दिल-ओ-जाँ और

(e) हरचन्द सुबक-दस्त हुए बुत-शिकनी में
हम हैं, तो अभी राह में है संग-ए-गिराँ और

सुबक-दस्त (or सबुक-दस्त both are correct) = expert, बुत-शिकनी = iconoclast, संग = stone,
गिराँ = heavy

(f) है ख़ून-ए-जिगर जोश में दिल खोल के रोता
होते कई जो दीदा-ए-ख़ूँनाबा-फ़िशाँ और

दीदा = eye, ख़ूँनाबा = mixture of blood and water, फ़िशाँ = shed /spread,
ख़ूँनाबा = (ख़ूँ = blood) + (आब = water), ख़ूँनाबा-फ़िशाँ = to sheds tears of blood

(j) कहा तुमने कि "क्यों हो ग़ैर के मिलने में रुस्वाई ?"
बजा कहते हो, सच कहते हो, फ़िर कहियो कि "हाँ क्यों हो ?"

रुस्वाई = disgrace, बजा = right/correct

(k) निकाला चाहता है काम क्या ता'अनों से तू "ग़ालिब"
तेरे बे-मेहर कहने से वो तुझ पर मेहरबाँ क्यों हो ?

ता'अना = taunter, बे-मेहर = unkind/repulsive

---

36. (a) ज़ुल्मत-कदे में मेरे शब-ए-ग़म का जोश है
इक शम्म'आ है दलील-ए-सहर, सो ख़मोश है

ज़ुल्मत = darkness, दलील = proof, सहर = morning

(b) नै मुज़्दा-ए-विसाल न नज़ारा-ए-जमाल
मुद्दत हुई कि आश्ती-ए-चश्म-ओ-गोश है

मुज़्दा = good news, विसाल = meeting, नज़ारा-ए-जमाल = seeing a beautiful face,
आश्ती = harmony/friendship/peace, चश्म = eye, गोश = ear

(c) मय ने किया है, हुस्न-ए-ख़ुद-आरा को बे-हिजाब
'ए शौक़, याँ इजाज़त-ए-तस्लीम-ए-होश है

मय = bar, ख़ुद-आरा = self adorer, हिजाब = veil, तस्लीम = greeting

(d) गौहर को इक्द-ए-गर्दन-ए-ख़ुबाँ में देखना
क्या औज पर सितारा-ए-गौहर-फ़रोश है

गौहर = pearl/gem, इक्द-ए-गर्दन = necklace, ख़ुबाँ = a beautiful person/sweetheart,
औज = highest point/summit, फ़रोश = merchant

(e) दीदार, वादा, हौसला, साक़ी, निगाह-ए-मस्त
बज़्म-ए-ख़याल मैकदा-ए-बे-ख़रोश है

दीदार = appearance, बे-ख़रोश = quite/dead

(f) 'ए ताज़ा वारिदान-ए-बिसात-ए-हवा-ए-दिल
ज़िन्हार गर तुम्हें हवस-ए-ना-ओ-नोश है

वारिदन = arrivals, बिसात = chess, हवा = desire/greed, ज़िन्हार = be warned !,
हवस = lust/greed, ना-ओ-नोश = feasting/drinking

(g) देखो मुझे जो दीदा-ए-इब्रत-निगाह हो
मेरी सुनो जो गोश-ए-नसीहत-नियोश है

दीदा = sight, इब्रत = admonition, गोश = ear, नसीहत = advice, नियोश = listener

(h) साक़ी बा-जल्वा दुश्मन-ए-इमान-ओ-आगही
मुत्रिब बा-नग़मा रहज़न-ए-तम्कीन-ओ-होश है

आगही = wisdom, मुत्रिब = singer, रहज़न = robber, तम्कीन = authority/power

(j) मैंने मजनूँ पे लड़कपन में "असद"
संग उठाया था कि सर याद आया

संग = stone

---

35. (a) किसी को दे के दिल कोई नवा-सन्ज-ए-फ़ुग़ाँ क्यों हो ?
न हो जब दिल ही सीने में तो फ़िर मुँह में ज़ुबाँ क्यों हो ?

नवा-सन्ज = singer, फ़ुग़ाँ = clamour

(b) वो अपनी ख़ू न छोड़ेंगे, हम अपनी वज़'आ क्यों बदलें ?
सुबक-सर बनके क्या पूछें कि हम से सर-गिराँ क्यों हो ?

ख़ू = habit, वज़'आ = conduct/behaviour, सुबक-सर = light headed/ unsteady,
सर-गिराँ = arrogant/proud

(c) किया ग़म-ख़्वार ने रुस्वा, लगे आग इस मुहब्बत को
न लाये ताब जो ग़म की, वो मेरा राज़दाँ क्यों हो ?

ग़म-ख़्वार = comforter, ताब = courage/patience, राज़दाँ = friend

(d) वफ़ा कैसी ? कहाँ का इश्क़ ? जब सर फोड़ना ठेहरा
तो फ़िर 'ए संग-दिल तेरा ही संग-ए-आस्ताँ क्यों हो ?

संग-दिल = hard hearted/merciless, संग-ए-आस्ताँ = threshold

(e) क़फ़स में मुझ से रूदाद-ए-चमन कहते न डर हमदम
गिरी है जिस पे कल बिजली वो मेरा आशियाँ क्यों हो ?

क़फ़स = cage/prison, रूदाद = report/statement

(f) ये कह सकते हो "हम दिल में नहीं हैं" पर ये बतलाओ
कि जब दिल में तुम्ही-तुम हो तो आँखो से निहाँ क्यों हो ?

निहाँ = hidden

(g) ग़लत है जज़्बा-ए-दिल का शिक्वा, देखो जुर्म किसका है
न खींचो गर तुम अपने को, कशाकश दर्मियाँ क्यों हो ?

जज़्बा = desire/feeling, शिक्वा = complaint, कशाकश = struggle/dilemma, दर्मियाँ = between

(h) ये फ़ितना आदमी की ख़ाना-वीरानी को क्या कम है ?
हुए तुम दोस्त जिसके, दुश्मन उसका आस्माँ क्यों हो ?

फ़ितना = quarrel, ख़ाना-वीरानी = ruinning of home

(i) यही है आज़माना तो सताना किस को कहते हैं ?
'अदू के हो लिये जब तुम तो मेरा इम्तिहाँ क्यों हो ?

'अदू = enemy, इम्तिहाँ = examination

(h) की मेरे क़त्ल के बाद उसने जफ़ा से तौबा
हाय उस ज़ूद-पशेमाँ का पशेमाँ होना

जफ़ा = oppression, ज़ूद = quickly, पशेमाँ = ashamed/embarrassed

(i) हैफ़ उस चार गिरह कपड़े की क़िस्मत "ग़ालिब"
जिस की क़िस्मत में हो आशिक़ का गिरेबाँ होना

हैफ़ = alas!, गिरह = one sixteenth of a yard, गिरेबाँ = collar

---

34. (a) फ़िर मुझे दीदा-ए-तर याद आया
दिल जिगर तश्ना-ए-फ़रियाद आया

दीदा-ए-तर = wet eyes, तश्ना (or तिश्ना) = thirsty

(b) दम लिया था न क़यामत ने हनोज़
फ़िर तेरा वक़्त-ए-सफ़र याद आया

हनोज़ = yet/still

(c) सादगी हाय तमन्ना, यानी
फ़िर वो नै-रंग-ए-नज़र याद आया

नै-रंग = fascinating

(d) उज्र-ए-वामाँदगी 'ए हसरत-ए-दिल
नाला करता था जिगर याद आया

उज्र = excuse, वामाँदगी = tiredness

(e) ज़िन्दगी यों भी गुज़र ही जाती
क्यों तेरा राह्गुज़र याद आया ?

(f) क्या ही रिज़्वाँ से लड़ायी होगी
घर तेरा ख़ुल्द में गर याद आया

रिज़्वाँ = doorkeeper of paradise, ख़ुल्द = heaven/paradise

(g) आह वो जुर्रत-ए-फ़रियाद कहाँ
दिल से तंग आके जिगर याद आया

जुर्रत = courage/valour

(h) फ़िर तेरे कूचे को जाता है ख़याल
दिल-ए-गुमगश्ता मगर याद आया

कूचा = a narrow street/lane, गुमगश्ता = missing

(i) कोई वीरानी-सी-वीरानी है
दश्त को देख के घर याद आया

दश्त = desert

(n) इक नौ-बहार-ए-नाज़ को ताक़े है फ़िर निगाह
चहरा फ़ुरोग़-ए-मय से गुलिस्ताँ किये हुए

नौ-बहार-ए-नाज़ = lover, फ़ुरोग़ = light/bright

(o) फ़िर जी में है कि दर पे किसी के पड़े रहें
सर ज़र-ए-बार-ए-मिन्नत-ए-दरबाँ किये हुए

ज़र = money/wealth, बार = burden/load, मिन्नत = supplicate

(p) जी ढूँढ़ता है फ़िर वोही फ़ुर्सत के रात दिन
बैठे रहें तसव्वुर-ए-जानाँ किये हुए

तसव्वुर = imagination

(q) "ग़ालिब" हमें न छेड़ कि फ़िर जोश-ए-अश्क़ से
बैठे हैं हम तहय्या-ए-तूफ़ाँ किये हुए

तहय्या = determined

---

33. (a) बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना
आदमी को भी मुयस्सर नहीं इन्साँ होना

दुश्वार = difficult, मुयस्सर = possible

(b) गिरिया चाहे है ख़राबी मेरे काशाने की
दर-ओ-दीवार से टपके है बयाबाँ होना

गिरियाँ = weeping, काशाना = house, बयाबाँ = wilderness

(c) वा-ए-दीवानगी-ए-शौक़, के हर दम मुझको
आप जाना उधर और आप ही हैराँ होना

(d) जल्वा अज़-बस की तक़ाज़ा-ए-निगाह करता है
जौहर-ए-आइना भी चाहे है मिशगाँ होना

अज़ = from/then/by, जौहर = skill/knowledge, मिशगाँ = eyelid

(e) इश्रत-ए-क़त्ल-गह-ए-'एहल-ए-तमन्ना मत पूछ
ईद-ए-नज़ारा है शमशीर का उरियाँ होना

इश्रत = joy/delight, शमशीर = sword, उरियाँ = naked/bare

(f) ले गये ख़ाक में हम दाग़-ए-तमन्ना-ए-निशात
तू हो और आप बा-सद-रंग-ए-गुलिस्ताँ होना

निशात (or नशात) = enthusiasm/happiness, सद-रंग = hundred colours

(g) इश्रत-ए-पारा-ए-दिल, ज़ख़्म-ए-तमन्ना-खाना
लज़्ज़त-ए-रीश-ए-जिगर ग़र्क़-ए-नमकदाँ होना

इश्रत = joy/delight, पारा = fragment/piece, लज़्ज़त = taste, रीश = wound, ग़र्क़ = drown/sink, नमकदाँ = container to keep salt

(c) फ़िर वज़'आ-ए-'एहतियात से रुकने लगा है दम
बरसों हुए हैं चाक गिरेबाँ किये हुए

वज़'आ = conduct/behaviour, 'एहतियात = care, चाक = torn, गिरेबाँ = collar

(d) फ़िर गर्म-नाला हाय शरर-बार है नफ़स
मुद्दत हुई है सैर-ए-चिराग़ाँ किये हुए

शरर-बार = raining sparks of fire, नफ़स = breath

(e) फ़िर पुर्सिश-ए-जराहत-ए-दिल को चला है इश्क़
सामान-ए-सद-हज़ार नमकदाँ किये हुए

पुर्सिश = enquiry, जराहत (or जिराहत) = surgery, सद = hundred,
नमकदाँ = container to keep salt

(f) फ़िर भर रहा है ख़ामा-ए-मिश्गाँ बा-ख़ून-ए-दिल
साज़-ए-चमन-तराज़ी-ए-दामाँ किये हुए

ख़ामा = pen, मिश्गाँ = eyelid, साज़ = disposition, तराज़ी = consenting

(g) बा-हम-दिगर हुए हैं दिल-ओ-दीदा फ़िर रक़ीब
नज़ारा-ओ-ख़याल का सामाँ किये हुए

हम-दिगर = mutual/in between, सामाँ = confront

(h) दिल फ़िर तवाफ़-ए-कू-ए-मलामत को जाए है
पिन्दार का समन-कदा वीराँ किये हुए

तवाफ़ = circuit, कू = lane/street, मलामत = rebuke/blame, पिन्दार = pride/arrogance,
समन-कदा = house of jasmine flowers, here it means temple

(i) फ़िर शौक़ कर रहा है ख़रीदार की तलब
अर्ज़-ए-मत'आ-ए-'अक़्ल-ओ-दिल-ओ-जाँ किये हुए

तलब = search, मत'आ = valuables

(j) दौड़े है फ़िर हरेक गुल-ओ-लाला पर ख़याल
सद-गुल-सिताँ निगाह का सामाँ किये हुए

(k) फ़िर चाहता हूँ नामा-ए-दिलदार खोलना
जाँ नज़्र-ए-दिल-फ़रेबी-ए-उन्वाँ किये हुए

नामा-ए-दिलदार = love letter, उन्वाँ = title/preface

(l) माँगे है फ़िर किसी को लब-ए-बाम पर हवस
ज़ुल्फ़-ए-सियाह रुख़ पे परेशाँ किये हुए

लब-ए-बाम = the corner of a terrace, सियाह = black/dark

(m) चाहे फ़िर किसी को मुक़ाबिल में आरज़ू
सूरमे से तेज़ दश्ना-ए-मिश्गाँ किये हुए

मुक़ाबिल = confronting, दश्ना = dagger, मिश्गाँ = eyelids

(b) दैर नहीं, हरम नहीं, दर नहीं, आस्ताँ नहीं
बैठे हैं रेह्गुज़र पे हम, ग़ैर हमें उठाये क्यों ?

दैर = temple, हरम = mosque, दर = gate, आस्ताँ = abode, रेह्गुज़र = path/way

(c) जब वो जमाल-ए-दिल-फ़रोज़, सूरत-ए-मेहेर-ए-नीम-रोज़
आप ही हो नज़ारा-सोज़, पर्दे में मुँह छुपाये क्यों ?

जमाल = beauty, फ़रोज़ = shining/luminous, मेहेर = sun, नीम-रोज़ = mid day,
नज़ारा-सोज़ = beautiful/worth seeing

(d) दश्ना-ए-ग़म्ज़ा जाँ-सिताँ, नावक-ए-नाज़ बे-पनाह
तेरा ही अक्स-ए-रुख़ सही, सामने तेरे आये क्यों ?

दश्ना = dagger, ग़म्ज़ा = amorous glance, जाँ-सिताँ = distroying life,
नावक = a kind of arrow, अक्स = image

(e) क़ैद-ए-हयात-ओ-बन्द-ए-ग़म अस्ल में दोनो एक हैं
मौत से पहेले आदमी ग़म से नजात पाये क्यों ?

हयात = life, बन्द-ए-ग़म = concealed/hidden sorrows, नजात = release/liberation

(f) हुस्न और उसपे हुस्न-ज़न रह गयी बुलहवस की शर्म
अपने पे 'एतमाद है, ग़ैर को आज़माये क्यों ?

हुस्न-ज़न = favourable view, बुलहवस = slave of passions/very greedy, 'एतमाद = reliance/dependance

(g) वाँ वो ग़ुरूर-ए-इज़ा'ज़-ओ-नाज़ याँ ये हिजाब-ए-पास-ए-वज़'आ
राह में हम मिले कहाँ, बज़्म में वो बुलाये क्यों ?

ग़ुरूर = pride, इज़ा'ज़-ओ-नाज़ = respect and beauty, हिजाब = veil/modesty, पास = regard,
वज़'आ = behaviour

(h) हाँ वो नहीं ख़ुदा-परस्त, जाओ वो बे-वफ़ा सही
जिसको हो दीन-ओ-दिल 'अज़ीज़, उसकी गली में जाये क्यों ?

परस्त = worshipper, दीन = religion/faith

(i) "ग़ालिब"-ए-ख़स्ता के बग़ैर कौन से काम बन्द हैं ?
रोइये ज़ार-ज़ार क्या, कीजिये हाय-हाय क्यों ?

ख़स्ता = sick/injured, ज़ार-ज़ार = bitterly

---

32. (a) मुद्दत हुई है यार को मेहमाँ किये हुए
जोश-ए-क़दाह से बज़्म चिराग़ाँ किये हुए

क़दाह = goblet

(b) करता हूँ जम'आ फ़िर जिगर-ए-लख़्त-लख़्त को
अर्सा हुआ है दावत-ए-मिश्गाँ किये हुए

लख़्त = piece, मिश्गाँ = eyelid

30. (a) इश्क़ मुझको नहीं, वेहशत ही सही
मेरी वेहशत, तेरी शोहरत ही सही

वेहशत = solitude, शोहरत = fame

(b) क़त'आ कीजे न त'अल्लुक़ हम से
कुछ नहीं है तो 'अदावत ही सही

क़त'आ = break/intercept, त'अल्लुक़ = relation/connection, 'अदावत = hatred/animosity

(c) मेरे होने में है क्या रुस्वाई ?
'ए वो मजलिस नहीं ख़लवत ही सही

मजलिस = assembly, ख़लवत = isolation

(d) हम भी दुश्मन तो नहीं हैं अपने
ग़ैर को तुझ से मोहब्बत ही सही

(e) अपनी हस्ती ही से हो, जो कुछ हो !
आगही गर नहीं ग़फ़्लत ही सही

हस्ती = existence, आगही = knowledge/information, ग़फ़्लत = negligence

(f) 'उम्र हरचन्द के है बर्क़-ए-ख़िराम
दिल के ख़ूँ करने की फ़ुर्सत ही सही

बर्क़ = lightning, ख़िराम = manner of walking

(g) हम कोई तर्क़-ए-वफ़ा करते हैं
न सही इश्क़, मुसीबत ही सही

तर्क़ = relinquishment

(h) कुछ तो दे 'ए फ़लक-ए-ना-इन्साफ़
आह-ओ-फ़रियाद की रुख़सत ही सही

फ़लक = sky

(i) हम भी तस्लीम की ख़ूँ डालेंगे
बे-नियाज़ी तेरी 'आदत ही सही

तस्लीम = greeting/saluting, ख़ू = habit, बे-नियाज़ी = independence

(j) यार से छेड़ा चली जाए, "असद"
गर नही वस्ल तो हसरत ही सही

वस्ल = meeting, हसरत = desire

---

31. (a) दिल ही तो है न संग-ओ-ख़िश्त दर्द से भर न आये क्यों ?
रोयेंगे हम हज़ार बार, कोई हमें सताये क्यों ?

संग = stone, ख़िश्त = brick

(f) क्यों न चीख़ूँ कि याद करते हैं
मेरी आवाज़ गर नहीं आती

(g) दाग़-ए-दिल गर नज़र नहीं आता
बू भी 'ए चारागर ! नहीं आती

चारागर = healer/doctor

(h) हम वहाँ हैं जहाँ से हमको भी
कुछ हमारी ख़बर नहीं आती

(i) मरते हैं आरज़ू में मरने की
मौत आती है पर नहीं आती

(j) काब'आ किस मुँह से जाओगे "ग़ालिब"
शर्म तुमको मगर नहीं आती

---

29. (a) नुक्ताचीं है ग़म-ए-दिल उसको सुनाये न बने
क्या बने बात जहाँ बात बनाये न बने

नुक्ताचीं = critic/sweetheart

(b) मैं बुलाता तो हूँ उसको मगर 'ए जज़्बा-ए-दिल
उसपे बन जाये कुछ 'ऐसी कि बिन आये न बने

(c) खेल समझा है कहीं छोड़ न दे, भूल न जाय
काश ! यूँ भी हो कि बिन मेरे सताये न बने

(d) ग़ैर फ़िरता है लिये यूँ तेरे ख़त को कि अगर
कोई पूछे कि ये क्या है ? तो छिपाये न बने

(e) इस नज़ाकत का बुरा हो, वो भले हैं तो क्या
हाथ आये तो उन्हें हाथ लगाये न बने

नज़ाकत = elegance

(f) कह सके कौन कि ये जल्वा-गरी किसकी है
पर्दा छोड़ा है वो उसने कि उठाये न बने

जल्वा-गरी = manifestation

(g) मौत की राह न देखूँ कि बिन आये न रहे
तुमको चाहूँ कि न आओ, तो बुलाये न बने

(h) बोझ वो सर पे गिरा है कि उठाये न उठे
काम वो आन पड़ा है, कि बनाये न बने

(i) इश्क़ पर ज़ोर नहीं, है ये वो आतिश "ग़ालिब"
कि लगाये न लगे और बुझाये न बने

आतिश = fire

(c) हम कहाँ क़िस्मत आज़माने जायें ?
तू ही जब ख़न्जर आज़मा न हुआ

(d) कितने शीरीं हैं तेरे लब ! कि रक़ीब
गालियाँ खाके बे-मज़ा न हुआ

शीरीं = sweet

(e) है ख़बर गर्म उनके आने की
आज ही घर में बोरिया न हुआ !

बोरिया = mat, here it refers to groceries

(f) क्या वो नामरूद की ख़ुदाई थी
बन्दगी में तेरा भला न हुआ

नमरूद = an old king who used to say that he was God

(g) जान दी, दी हुई उसी कि थी
हक़ तो ये है के हक़ अदा न हुआ

(h) ज़ख़्म गर दब गया, लहू न थमा
काम गर रुक गया, रवाँ न हुआ

रवाँ = right/lawful

(i) रहज़नी है कि दिल-सितानी है ?
लेके दिल, दिल-सिताँ रवा न हुआ

दिल-सिताँ = lover, रवा = agree/admissible

(j) कुछ तो पढ़िये कि लोग कहते हैं
'आज "ग़ालिब" ग़ज़लसरा न हुआ'

---

28. (a) कोई उम्मीद बर नहीं आती
कोई सूरत नज़र नहीं आती

(b) मौत का एक दिन मु'अय्यन है
नींद क्यों रात भर नहीं आती ?

मु'अय्यन = definite

(c) आगे आती थी हाल-ए-दिल पे हंसी
अब किसी बात पर नहीं आती

(d) जानता हूँ सवाब-ए-ता'अत-ओ-ज़हद
पर तबीयत इधर नहीं आती

सवाब = reward of good deeds in next life, ता'अत = devotion, ज़हद = religious deeds or duties

(e) है कुछ 'ऐसी ही बात जो चुप हूँ
वर्ना क्या बात कर नहीं आती ?

(b) छोड़ा न रश्क ने कि तेरे घर का नाम लूँ ?
हर एक से पूछता हूँ कि जाऊँ किधर को मैं ?

रश्क = jealousy

(c) जाना पड़ा रक़ीब के दर पर हज़ार बार
'ए काश न तेरी रहगुज़र को मैं

रक़ीब = opponent, रहगुज़र = road/path

(d) है क्या जो कस के बाँधिये मेरी बला दर'ए
क्या नहीं हूँ तुम्हारी कमर को मैं ?

(e) लो वो भी कहते हैं कि ये बे-नंग-ओ-नाम है
ये अगर तो लुटाता न घर को मैं

(f) चलता हूँ थोड़ी दूर हर इक तेज़ रौ के साथ
पेहचानता नहीं हूँ अभी राहबर को मैं

रौ = currents, राहबर = guide

(g) ख़्वाहिश को 'अहम्क़ों ने परस्तिश दिया क़रार
क्या पूजता हूँ उस बुत-ए-बेदादगर को मैं ?

'अह्मक़ = fool/idiot, परस्तिश = worship, बुत = idol/lover, बेदादगर = cruel

(h) फ़िर बे-ख़ुदी में भूल गया राह-ए-कू-ए-यार
जाता वर्ना एक दिन अपनी ख़बर को मैं

बे-ख़ुदी = rapture, कू-ए-यार = lover's street

(i) अपने पे कर रहा हूँ क़ियास 'अहल-ए-दहर का
समझा हूँ दिल-पज़ीर मत'आ-ए-हुनर को मैं

क़ियास = supposition, 'अहल = people, दहर = period/era, पज़ीर = receiving, मत'आ = wealth, हुनर = skill

(j) "ग़ालिब" ख़ुदा करे कि सवार-ए-समन्द-ए-नाज़
देखूँ 'अली-बहादुर-ए-आली-गुहर को मैं

सवार = ride, समन्द = horse, आली-गुहर = belonging to a high caste or a rich family

---

27. (a) दर्द मिन्नत-कश-ए-दवा न हुआ
मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ

मिन्नत-कश-ए-दवा = obliged to medicine

(b) जम'आ करते हो क्यों रक़ीबों का ?
इक तमाशा हुआ गिला न हुआ

रक़ीब = opponent, गिला = complaint

(k) ये मसाइल-ए-तसव्वुफ़, ये तेरा बयाँ "ग़ालिब" !
तुझे हम वली समझते, जो न बादा-ख़्वार होता

मसाइल = topics, तसव्वुफ़ = mysticism, वली = prince/friend, बादा-ख़्वार = boozer

---

25. (a) धोता हूँ जब मैं पीने को उस सीम-तन के पाँव
रखता है ज़िद से खींच के बाहर लगन के पाँव

सीम-तन = silver bodied, लगन = a basin

(b) दी सादगी से जान पड़ूँ कोहकन के पाँव
हैहात ! क्यों न टूट गये पीर्ज़न के पाँव

कोहकन = a mountain digger, हैहात = alas !, पीर्ज़न = old woman

(c) भागे थे हम बहुत सी उसकी सज़ा है ये
होकर असीर दाबते हैं राहज़न के पाँव

असीर = prisoner, राहज़न = robber

(d) मर्हम कि जुस्तजू में घिरा हूँ जो दूर-दूर
तन से सिवा फ़िगार है इस ख़स्ता-तन के पाँव

जुस्तजू = desire, फ़िगार = wounded

(e) अल्लाह रे ज़ौक़-ए-दश्त-ए-नर्वर्दी कि बाद-ए-मर्ग
हिलते हैं ख़ुद-बा-ख़ुद मेरे अन्दर क़फ़न के पाँव

ज़ौक़ = taste, दश्त-ए-नर्वर्दी = to roam around in wilderness, मर्ग = death

(f) है जोश-ए-गुल बहार में याँ तक कि हर तरफ़
उडते हुए उलझते हैं मुर्ग़-ए-चमन के पाँव

मुर्ग़ = bird

(g) शब को किसी के ख़्वाब में आया न हो कहीं
दुखते हैं आज उस बुत-ए-नाज़ुक-बदन के पाँव

बुत = idol/beloved

(h) "ग़ालिब" मेरे कलाम में क्योंकर मज़ा न हो ?
पीता हूँ धोके ख़ुसरौ-ए-शीरीं-सुख़न के पाँव

कलाम = writing/speech, शीरीं = sweet, सुख़न = speech/words,
ख़ुस्रौ-ए-शीरीं-सुख़न = this is pointed at Badshah Zafar

---

26. (a) हैराँ हूँ दिल को रोऊँ कि पीटूँ जिगर को मैं ?
मक़्दूर हूँ तो साथ रखूँ नौहागर को मैं

मक़्दूर = capable, नौहागर = mourner/lamenter

(h) मुज़्महिल हो गये क़ुव'आ "ग़ालिब"
वो अनासिर में 'एत्दाल कहाँ ?

मुज़्महिल = exhausted/idle, क़ुव'आ = limbs, अनासिर = elements, 'एत्दाल = moderation

---

24. (a) ये न थी हमारी क़िस्मत के विसाल-ए-यार होता
अगर और जीते रेहते यही इन्तेज़ार होता

विसाल-ए-यार = meeting with lover

(b) तेरे वादे पर जिये हम तो ये जान झूट जाना
के ख़ुशी से मर न जाते अगर 'ऐतबार होता

'ऐतबार = trust/confidence

(c) तेरी नाज़ुकी से जाना कि बन्धा था 'एहेद-बूदा
कभी तू न तोड़ सकता अगर ऊस्तुवार होता

'एहेद = oath, ऊस्तुवार = firm/determined

(d) कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीर-ए-नीमकश को
ये ख़लिश कहाँ से होती जो जिगर के पार होता

तीर-ए-नीमकश = half drawn arrow, ख़लिश = pain

(e) ये कहाँ कि दोस्ती है के बने हैं दोस्त नासेह
कोई चारसाज़ होता, कोई ग़मगुसार होता

नासेह = councellor, चारसाज़ = healer, ग़मगुसार = sympathizer

(f) रग-ए-संग से टपकता वो लहू कि फ़िर न थमता
जिसे ग़म समझ रहे हो, ये अगर शरार होता

रग = nerve, संग = stone, शरार = flash/gleam

(g) ग़म अगर्चे जाँ-गुलिस है, पे कहाँ बचें के दिल है
ग़म-ए-इश्क़ गर न होता, ग़म-ए-रोज़गार होता

जाँ-गुलिस = life threatning

(h) कहूँ किस से मैं के क्या है, शब-ए-ग़म बुरी बला है
मुझे क्या बुरा था मरना ? अगर एक बार होता

(i) हुए मर के हम जो रुस्वा, हुए क्यों न ग़र्क़-ए-दरिया
न कभी जनाज़ा उठता, न कहीं मज़ार होता

ग़र्क़ = drown/sink

(j) उसे कौन देख सकता कि यगाना है वो यकता
जो दूई कि बू भी होती तो कहीं दो चार होता

यगाना = kinsman, यक्ता = matchless/incomparable, दूई = duality

(d) कहता है कौन नाला-ए-बुलबुल को बे-असर
पर्दे में गुल के लाख जिगर चाक हो गये

चाक = slit/torn

(e) पूछे है क्या वुजूद-ओ-अदम 'एहल-ए-शौक़ का
आप अपनी आग से ख़स-ओ-ख़ाशाक हो गये

वुजूद = existence, अदम = non existence, ख़स-ओ-ख़ाशाक = destroyed

(f) करने गये थे उससे तग़ाफ़ुल का हम गिला
कि एक ही निगाह कि बस ख़ाक हो गये

तग़ाफ़ुल = negligence, गिला = complaint, ख़ाक = dust/ashes

(g) इस ढंग से उठायी कल उसने "असद" की लाश
दुश्मन भी जिसको देखके ग़मनाक हो गये

ग़मनाक = grief stricken

---

23. (a) वो फ़िराक़ और वो विसाल कहाँ ?
वो शब-ओ-रोज़-ओ-माह-ओ-साल कहाँ ?

फ़िराक़ = separation, विसाल = meeting, शब = night, रोज़ = day, माह = month, साल = year

(b) फ़ुर्सत-ए-कारोबार-ए-शौक़ किसे ?
ज़ौक़-ए-नज़ारा-ए-जमाल कहाँ ?

ज़ौक़ = delight/joy, जमाल = beauty

(c) दिल तो दिल वो दिमाग़ भी न रहा
शोर-ए-सौदा-ए-ख़त्त-ओ-ख़ाल कहाँ ?

(d) थी वो इक शख़्स के तसव्वुर से
अब वो रानाइ-ए-ख़याल कहाँ ?

तसव्वुर = imagination, रानाइ-ए-ख़याल = tender thoughts

(e) 'ऐसा आसाँ नहीं लहू रोना
दिल में ताक़त जिगर में हाल कहाँ ?

हाल = spiritual ecstasy

(f) हमसे छूटा क़मार-ख़ाना-ए-इश्क़
वाँ जो जवैं, गिरह में माल कहाँ ?

क़मार-ख़ाना = casino, गिरह = knot/joint

(g) फ़िक्र-ए-दुनियाँ में सर खपाता हूँ
मैं कहाँ और ये वबाल कहाँ ?

वबाल = calamity

(g) जल्वा फ़िर अर्ज़-ए-नाज़ करता है
रोज़-ए-बाज़ार-ए-जाँ-सिपारी है

जल्वा = splendour, जाँ-सिपारी = resigning one's life into the hands of another

(h) फ़िर उसी बेवफ़ा पे मरते हैं
फ़िर वोही ज़िन्दगी हमारी है

(i) फ़िर खुला है दर-ए-अदालत-ए-नाज़
गर्म बाज़ार-ए-फ़ौज-दारी है

दर = abode, फ़ौज-दारी = military court

(j) हो रहा है जहान में अंधेर
ज़ुल्फ़ की फ़िर सरिश्ता-दारी है

सरिश्ता-दारी = a regulator's position

(k) फ़िर किया पारा-ए-जिगर ने सवाल
एक फ़रियाद-ओ-आह-ओ-ज़ारी है

पारा = fragment

(l) फ़िर हुए हैं गवाह-ए-इश्क़ तलब
अश्क़-बारी का हुक्म-ज़ारी है

तलब = search/desire/request, अश्क़-बारी = lamentation

(m) दिल-ओ-मिश्गाँ का जो मुक़दमा था
आज फ़िर उसकी रूब-क़ारी है

मिश्गाँ = eyelids, रूब-क़ारी = to put the mind into work

(n) बे-ख़ुदी बे-सबब नहीं "ग़ालिब"
कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है

बे-ख़ुदी = rapture, बे-सबब = without any reason, पर्दादारी = to hide, esp. fault

---

22. (a) रोने से और इश्क़ में बे-बाक हो गये
धोये गये हम 'एसे कि बस पाक हो गये

बे-बाक = outspoken/bold, पाक = pure/clean/holy

(b) सर्फ़-ए-बहा-ए-मय हुए आलात-ए-मयकशी
थे ये ही दो हिसाब, सो यों पाक हो गये

सर्फ़ = expenditure, बहा = value/price, मय = bar, आलात = instruments/apparatus, मयकशी = boozing

(c) रुस्वा-ए-दहर गो हुए आवारगी से तुम
बारे तबीयतों के तो चालाक हो गये

दहर = world, बारे = at last

(k) ख़ुश होते हैं पर वस्ल में यों मर नहीं जाते
आयी शब-ए-हिज्राँ कि तमन्ना मेरे आगे

हिज्र = separation

(l) है मौज-ज़न इक क़ुल्ज़ुम-ए-ख़ूँ, काश, यही हो
आता है अभी देखिये क्या-क्या मेरे आगे

मौज-ज़न = exciting, क़ुल्ज़ुम = sea, ख़ूँ = blood

(m) गो हाथ को ज़ुम्बिश नहीं आँहों में तो दम है
रेहने दो अभी साग़र-ओ-मीना मेरे आगे

ज़ुम्बिश = movement/vibration, साग़र-ओ-मीना = goblet

(n) हम-पेशा-ओ-हम-मशर्ब-ओ-हम-राज़ है मेरा
"ग़ालिब" को बुरा क्यों कहो अच्छा मेरे आगे !

हम-पेशा = of the same profession, हम-मशर्ब = of the same habits/a fellow boozer,
हम-राज़ = confidant

---

21. (a) फ़िर कुछ इस दिल को बेक़रारी है
सीना ज़ोया-ए-ज़ख़्म-ए-कारी है

ज़ोया = searcher, ज़ख़्म-ए-कारी = deep wound

(b) फ़िर जिगर खोदने लगा नाख़ुन
आमद-ए-फ़स्ल-ए-लाला-क़ारी है

आमद = arrival, फ़स्ल = season/harvest

(c) क़िब्ला-ए-मक़्सद-ए-निगाह-ए-नियाज़
फ़िर वही पर्दा-ए--'अमारी है

नियाज़ = desire, 'अमारी = rider's seat with a canopy on an elephant or camel

(d) चश्म-ए-दल्लाल-ए-जिन्स-ए-रुस्वाई
दिल ख़रीदार-ए-ज़ौक़-ए-ख़्वारी है

चश्म = eye, जिन्स = things/items, ज़ौक़ = taste

(e) वोही सद-रंग नाला फ़र्सायी
वोही सद-गूना अश्क़-बारी है

सद = hundred, नाला फ़र्सायी = lamenter, सद-गूना = hundred times, अश्क़-बारी = lamentation

(f) दिल हवा-ए-ख़िराम-ए-नाज़ से फ़िर
महशरिस्तान-ए-बेक़रारी है

ख़िराम = speed, महशर = the last day/" क़यामत का दिन ",
महशरिस्तान = place of the last day

(c) ज़ेहर मिलता ही नहीं मुझको सितमगर, वर्ना
क्या क़सम है तेरे मिलने की, के खा भी न सकूँ

सितमगर = oppressor

---

20. (a) बाज़ीचा-ए-अत्फ़ाल है दुनिया मेरे आगे
होता है शब-ओ-रोज़ तमाशा मेरे आगे

बाज़ीचा = play/sport, अत्फ़ाल = children

(b) इक खेल है औरंग-ए-सुलेमाँ मेरे नज़दीक
इक बात है 'एजाज़-ए-मसीहा मेरे आगे

औरंग = throne, 'एजाज़ = miracle

(c) जुज़ नाम नहीं सूरत-ए-आलम मुझे मंज़ूर
जुज़ वहम नहीं हस्ती-ए-अशिया मेरे आगे

जुज़ = other than, आलम = world, हस्ती = existence, अशिया = things/items

(d) होता है निहाँ गर्द में सेहरा मेरे होते
घिसता है जबीं ख़ाक पे दरिया मेरे आगे

निहाँ = hidden, गर्द = dust, सेहरा = desert, जबीं = forehead

(e) मत पूछ के क्या हाल है मेरा तेरे पीछे ?
तू देख के क्या रंग है तेरा मेरे आगे

(f) सच कहते हो, ख़ुदबीन-ओ-ख़ुद-आरा न क्यों हूँ ?
बैठा है बुत-ए-आइना-सीमा मेरे आगे

ख़ुदबीन = proud/arrogant, ख़ुद-आरा = self adorer, बुत = beloved,
आइना-सीमा = like the face of a mirror

(g) फ़िर देखिये अन्दाज़-ए-गुल-अफ़्शानि-ए-गुफ़्तार
रख दे कोई पैमाना-ओ-सहबा मेरे आगे

गुल-अफ़्शानी = to scatter flowers, गुफ़्तार = speech/discourse, सहबा = wine, esp. red wine

(h) नफ़रत का गुमाँ गुज़रे है, मैं रश्क से गुज़रा
क्यों कर कहूँ, लो नाम न उसका मेरे आगे

गुमाँ = doubt, रश्क = envy

(i) इमाँ मुझे रोके है जो खींचे है मुझे कुफ़्र
क'अबा मेरे पीछे है कलीसा मेरे आगे

कुफ़्र = impiety, कलीसा = church/cathedral

(j) आशिक़ हूँ, पे माशूक़-फ़रेबी है मेरा काम
मजनूँ को बुरा कहती है लैला मेरे आगे

फ़रेबी = a fraud/cheat

(e) क़ाता-ए-'अमार है अक्सर नुजूम
वो बला-ए-आस्मानी और है

क़ाता-ए-'अमार = killers, नुजूम = stars, बला-ए-आस्मानी = natural calamity

(f) हो चुकीं "ग़ालिब" बलायें सब तमाम
एक मर्ग-ए-नागहानी और है

बलायें = calamities, मर्ग = death, नागहानी = sudden/accidental

---

18. (a) आह को चाहिये इक 'उम्र असर होने तक
कौन जीता है तेरी ज़ुल्फ़ के सर होने तक ?

(b) दाम हर मौज में है हल्क़ा-ए-सद-काम-ए-नहंग
देखें क्या गुज़रे है क़त्रे पे गुहर होने तक

दाम = net/trap, मौज = wave, हल्क़ा = ring/circle, सद = hundred, नहंग = crocodile,
सद-काम-ए-नहंग = crocodile with a hundred jaws, गुहर = pearl

(c) आशिक़ी सब्र तलब और तमन्ना बेताब
दिल का क्या रंग करूँ ख़ून-ए-जिगर होने तक ?

सब्र = patience, तलब = search

(d) हम ने माना के तग़ाफ़ुल न करोगे, लेकिन
ख़ाक हो जायेंगे हम तुमको ख़बर होने तक

तग़ाफ़ुल = neglect/ignore

(e) पर्तव-ए-ख़ुर से है शबनम को फ़न'आ की तालीम
मैं भी हूँ इक इनायत की नज़र होने तक

पर्तव-ए-ख़ुर = sun's reflection/light/image, शबनम = dew, फ़न'आ = mortality, इनायत = favour

(f) यक-नज़र बेश नहीं फ़ुर्सत-ए-हस्ती ग़ाफ़िल
गर्मी-ए-बज़्म है इक रक़्स-ए-शरर होने तक

बेश = too much/lots, फ़ुर्सत-ए-हस्ती = duration of life, ग़ाफ़िल = careless, रक़्स = dance,
शरर = flash/fire

(g) ग़म-ए-हस्ती का "असद" किस'से हो जुज़ मर्ग इलाज़
शम्म'आ हर रंग में जलती है सहर होने तक

हस्ती = life/existence, जुज़ = other than, मर्ग = death, सहर = morning

---

19. (a) मेहेरबाँ होके बुला लो मुझे चाहो जिस वक़्त
मैं गया वक़्त नहीं हूँ के फ़िर आ भी न सकूँ

(b) ज़ौफ़ में ताना-ए-अग़यार का शिकवा क्या है ?
बात कुछ सर तो नहीं है के उठा भी न सकूँ

ज़ौफ़ = weakness, ताना = taunt, अग़यार = enemy, शिकवा = complaint

(h) मोहब्बत में नहीं है फ़र्क़ जीने और मरने का
उसी को देख कर जीते हैं जिस काफ़िर पे दम निकले

(i) ज़रा कर जोर सीने पर कि तीर-ए-पुरसितम निकले
जो वो निकले तो दिल निकले, जो दिल निकले तो दम निकले

(j) ख़ुदा के वास्ते पर्दा न काबे से उठा ज़ालिम
कहीं 'एसा न हो याँ भी वोही काफ़िर सनम निकले

(k) कहाँ मैख़ाने का दरवाज़ा "ग़ालिब" और कहाँ वाइज़
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था के हम निकले

वाइज़ = preacher/advisor

---

16. (a) ये जो हम हिज्र में दीवार-ओ-दर को देखते हैं
कभी सबा को कभी नामाबर को देखते हैं

हिज्र = separation, दर = door, सबा = wind, नामाबर = messenger

(b) वो आये घर में हमारे ख़ुदा की कुदरत है
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं

(c) नज़र लगे न कहीं उसके दस्त-ओ-बाज़ू को
ये लोग क्यों मेरे ज़ख़्म-ए-जिगर को देखतें हैं ?

दस्त-ओ-बाज़ू = hands & shoulders

(d) तेरे जवाहिर-ए-तर्फ़-ए-कुलह को क्या देखें ?
हम औज-ए-ताल'आ-ए-लाल-ओ-गुहर को देखते हैं

जवाहिर = jewels, तर्फ़ = golden belt, कुलह = crown, औज = height/position, ताल'आ = luck,
लाल-ओ-गुहर = diamonds & pearls

---

17. (a) कोई दिन गर ज़िन्दगानी और है
अपने जी में हमने ठानी और है

(b) आतिश-ए-दोज़ख़ में ये गर्मी कहाँ
सोज़-ए-ग़म हाय निहानी और है

दोज़ख़ = hell, सोज़ = passion/heat, निहानी = internal/hidden

(c) बारहा देखी हैं उनकी रन्जिशें
पर कुछ अब के सर-गिरानी और है

सर-गिरानी = pride

(d) देके ख़त मुँह देखता है नामाबर
कुछ तो पैग़ाम-ए-ज़बानी और है

नामाबर = messenger

(h) बेदाद-ए-इश्क़ से नहीं डरता मगर "असद"
जिस दिल पे नाज़ था मुझे वो दिल नहीं रहा

बेदाद = injustice

---

14. (a) न था कुछ तो ख़ुदा था, कुछ न होता तो ख़ुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता ?

(b) हुआ जब ग़म से यूँ बेहिस तो ग़म क्या सर के कटने का
न होता गर जुदा तन से तो ज़ानूँ पर धरा होता

बेहिस = shocked/stunned, ज़ानूँ = knee

(c) हुई मुद्दत के "ग़ालिब" मर गया पर याद आता है
वो हर एक बात पे केहना, के यूँ होता तो क्या होता ?

मुद्दत = duration/period

---

15. (a) हज़ारों ख़्वाहिशें 'एसी के हर ख़्वाहिश पे दम निकले
बोहोत निकले मेरे अरमाँ लेकिन फ़िर भी कम निकले

(b) डरे क्यूँ मेरा क़ातिल क्या रहेगा उसकी गर्दन पर
वो ख़ूँ, जो चश्म-ए-तर से 'उम्र भर यूँ दम-बा-दम निकले

ख़ूँ = blood, चश्म = eye, तर = wet, दम-बा-दम = continously

(c) निकलना ख़ुल्द से आदम का सुनते आये हैं लेकिन
बोहोत बे-आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले

ख़ुल्द = heaven, बे-आबरु = disgrace, कूचा = street

(d) भरम खुल जाये ज़ालिम तेरे क़ामत की दराज़ी का
अगर इस तुर्रा-ए-पुर-पेच-ओ-ख़म का पेच-ओ-ख़म निकले

दराज़ी = length/delay, क़ामत = stature, तुर्रा = an ornamental tassel worn in the turban,
पेच-ओ-ख़म = curls in the hair/complexity

(e) मगर लिखवाये कोई उसको ख़त, तो हमसे लिखवाये
हुई सुबह और घर से कान पर रखकर क़लम निकले

(f) हुई इस दौर में मनसूब मुझसे बादा-आशामी
फ़िर आया वो ज़माना, जो जहाँ से जाम-ए-जम निकले

मनसूब = association, बादा-आशामी = association with drinking

(g) हुई जिनसे तवक़्क़ो ख़स्तगी की दाद पाने की
वो हमसे भी ज़ियादा ख़स्ता-ए-तेग़-ए-सितम निकले

तवक़्क़ो = expectation, ख़स्तगी = weakness, दाद = justice, ख़स्ता = broken/sick/injured,
तेग़ = sword, सितम = cruelity

(b) ज़ख़्म ने दाद न दी, तंगी-ए-दिल कि यारब !
तीर भी सीना-ए-बिस्मिल से पर-अफ़्शाँ निकला

दाद = justice, सीना-ए-बिस्मिल = wounded heart, पर = wings, अफ़्शाँ = rattle

(c) बू-ए-गुल, नाला-ए-दिल, दूद-ए-चराग़-ए-महफ़िल
जो तेरी बज़्म से निकला, सो परिशाँ निकला

बू = fragrance, गुल = flower, नाला = cry, दूद = smoke, esp. from a lamp that's been extinguished

(d) थी नौ-आमोज़-फ़न'आ हिम्मत-ए-दुश्वार-पसन्द
सख़्त मुश्किल है कि यह काम भी आसाँ निकला

नौ-आमोज़ = beginner, दुश्वार = difficult

(e) दिल में फ़िर गिरियाँ ने इक शोर उठाया "ग़ालिब"
आह जो क़त्रा न निकला था, सो तूफ़ाँ निकला

गिरियाँ = weeping, क़त्रा = drop

---

13. (a) 'अर्ज़-ए-नियाज़-ए-इश्क़ के क़ाबिल नहीं रहा
जिस दिल पे नाज़ था मुझे वो दिल नहीं रहा

नियाज़ = desire/an offering

(b) जाता हूँ दाग़-ए-हसरत-ए-हस्ती लिये हुए
हूँ शम्म'आ-कुश्ता दर्ख़ुर-ए-महफ़िल नहीं रहा

हस्ती = life/existence, शम्म'आ-कुश्ता = extinguished lamp, दर्ख़ुर = worthy

(c) मरने की 'ए दिल और ही तदबीर कर कि मैं
शायान-ए-दस्त-ओ-बाज़ु-ए-क़ातिल नहीं रहा

तदबीर = solution/remedy, शायान = worthy, दस्त = hand, बाज़ू = shoulder

(d) बररू-ए-शश जिहत दर-ए-आइना-बाज़ है
याँ इम्तिआज़-ए-नाकिस-ओ-क़ामिल नहीं रहा

बररू = in front, शश = six, जिहत = direction, इम्तिआज़ = distinction, नाकिस = cunning,
क़ामिल = intelligent

(e) वा कर दिये हैं शौक़ ने बन्द-ए-नक़ाब-ए-हुस्न
ग़ैर-अज़ निगाह अब कोई हायल नहीं रहा

वा = open, ग़ैर-अज़ = other than, हायल = obstacle

(f) गो मैं रहा, रही न सितम हाये रोज़गार
लेकिन तेरे ख़याल से ग़ाफ़िल नहीं रहा

सितम = oppression, ग़ाफ़िल = unaware/careless

(g) दिल से हवा-ए-किश्त-ए-वफ़ा मिट गयी कि वाँ
हासिल सिवाय हसरत-ए-हासिल नहीं रहा

(d) पिला दे ओअक से साक़ी जो हमसे नफ़रत है
प्याला गर नहीं देता न दे, शराब तो दे

ओअक = palm of the hand contracted so as to hold water

(e) "असद" ख़ुशी से मेरे हाथ पाँव फूल गये
कहा जो उसने ज़रा मेरे पाँव दाब तो दे

---

11. (a) घर जब बना लिया है तेरे दर पर कहे बग़ैर
जानेगा अब भी तू न मेरा घर कहे बग़ैर

(b) कहते हैं, जब रही न मुझे ताक़त-ए-सुख़न
जानूं किसी के दिल कि मैं क्योंकर कहे बग़ैर

ताक़त-ए-सुख़न = strength to speak

(c) काम उस'से आ पड़ा है कि जिसका जहान में
लेवे न कोई नाम 'सितमगर' कहे बग़ैर

सितमगर = oppressor

(d) जी में ही कुछ नहीं है हमारे, वर्ना हम
सर जाये या रहे, न रहें पर कहे बग़ैर

(e) छोड़ूँगा मैं न उस बुत-ए-काफ़िर का पूजना
छोड़े न ख़ल्क़ गो मुझे काफ़िर कहे बग़ैर

बुत = idol/lover, ख़ल्क़ = world

(f) मक़्सद है नाज़-ओ-ग़म्ज़ा, वले गुफ़्तगू में काम
चलता नहीं है, दश्ना-ओ-ख़ंजर कहे बग़ैर

ग़म्ज़ा = amorous glance, दश्ना = dagger

(g) हर चन्द हो मुशाहित-ए-हक़ कि गुफ़्तगू
बनती नहीं है बादा-ओ-साग़र कहे बग़ैर

मुशाहित = God, बादा = wine

(h) बेहरा हूँ मैं तो चाहिये दूना हो इल्तफ़ात
सुनता नहीं हूँ बात मुक़र्रर कहे बग़ैर

इल्तफ़ात = mercy, मुक़र्रर = again

(i) "ग़ालिब" न कर हुज़ूर में तू बार-बार 'अर्ज़
ज़ाहिर है तेरा हाल सब उन पर कहे बग़ैर

---

12. (a) शौक़ हर रंग रक़ीब-ए-सर-ओ-सामाँ निकला
क़ैस तस्वीर के पर्दे में भी उरियाँ निकला

रक़ीब = opponent, सर-ओ-सामाँ = with belongings, क़ैस ८ 'मजनूँ' , उरियाँ = nude

(c) मैं भी मुँह में ज़बान रखता हूँ
काश ! पूछो कि "मुद्दा क्या है" ?

(d) जब कि तुझ बिन नहीं कोई मौजूद
फ़िर ये हन्गामा, 'ए ख़ुदा ! क्या है

(e) ये परी चेहरा लोग कैसे हैं ?
ग़म्ज़ा-ओ-इश्वा-ओ-'अदा क्या है ?

परी चेहरा = angel faced, ग़म्ज़ा = amorous glance, इश्वा = coquetry

(f) शिकन-ए-ज़ुल्फ़-ए-अम्बरी क्यों है ?
निगाह-ए-चश्म-ए-सूर्मा सा क्या है ?

शिकन = wrinkle/fold, अम्बरी = fragrance, चश्म = eye

(g) सब्ज़ा-ओ-गुल कहाँ से आये हैं ?
अब्र क्या चीज़ है, हवा क्या है ?

अब्र = clouds

(h) हमको उनसे वफ़ा कि है उम्मीद
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है

(i) "हाँ भला कर तेरा भला होगा"
और दर्वेश की सदा क्या है ?

दर्वेश = beggar, सदा = voice

(j) जान तुम पर निसार करता हूँ
मैं नहीं जानता दुआ क्या है

(k) मैंने माना कि कुछ नहीं "ग़ालिब"
मुफ़्त हाथ आये तो बुरा क्या है ?

---

10. (a) वो आके ख़्वाब में तस्कीन-ए-इज़्तिराब तो दे
वले मुझे तपिश-ए-दिल, मज़ाल-ए-ख़्वाब तो दे

तस्कीन = satisfaction, इज़्तिराब = anxiety, तपिश = burn/passion, मज़ाल = strength

(b) करे है क़त्ल लगावत में तेरा रो देना
तेरी तरह कोई तेग़-ए-निगाह को आब तो दे

लगावत = affection, तेग़ = sword, आब = cool

(c) दिखाके जुम्बिश-ए-लब ही तमाम कर हमको
न दे जो बोसा, तो मुँह से कहीं जवाब तो दे

जुम्बिश = motion/vibration, बोसा = kiss

(m) "ग़ालिब" छुटी शराब, पर अब भी कभी-कभी
पीता हूँ रोज़-ए-अब्र -ओ- शब-ए-माह्ताब में

अब्र = clouds, रोज़-ए-अब्र = cloudy day, माह्ताब = moon

---

8. (a) दायम पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूँ मैं
ख़ाक 'ऐसी ज़िन्दगी पे के पत्थर नहीं हूँ मैं

दायम = always

(b) क्यूँ गर्दिश-ए-मुदाम से घबरा न जाये दिल ?
इन्सान हूँ, प्याला-ओ-साग़र नहीं हूँ मैं

गर्दिश = bad time/luck, मुदाम = always

(c) यारब ! ज़माना मुझको मिटाता है किस लिये ?
लोह-ए-जहाँ पे हर्फ़-ए-मुक़र्रर नहीं हूँ मैं

हर्फ़ = alphabet, मुक़र्रर = again

(d) हद चाहिये सज़ा में उक़ूबत के वास्ते
आख़िर गुनाहगार हूँ, काफ़िर नहीं हूँ मैं

उक़ूबत = pain

(e) किस वास्ते 'अज़ीज़ नहीं जानते मुझे ?
लाल-ओ-ज़ुमुर्रुद-ओ-ज़र-ओ-गौहर नहीं हूँ मैं

लाल = a kind of gem, ज़ुमुर्रुद = green colored gem, ज़र = gold, गौहर = gem

(f) रखते हो तुम क़दम मेरी आँखों से क्या दरेग़
रुत्बे में मेहर-ओ-माह से कमतर नहीं हूँ मैं

दरेग़ = regret/grief, मेहर = sun, माह = moon

(g) करते हो मुझको मन'आ-ए-क़दम-बोस किस लिये ?
क्या आस्मान के भी बराबर नहीं हूँ मैं ?

बोसा = kiss

(h) "ग़ालिब" वज़िफ़ा-ख़्वार हो, दो शाह को दुआ
वो दिन गये कि कहते थे , "नौकर नहीं हूँ मैं"

वज़िफ़ा-ख़्वार = pensioner

---

9. (a) दिल-ए-नादाँ तुझे हुआ क्या है ?
आख़िर इस दर्द की दवा क्या है

(b) हम हैं मुश्ताक़ और वो बेज़ार
या इलाही ! ये माजरा क्या है ?

मुश्ताक़ = interested, बेज़ार = displeased/sick of

(c) ता फ़िर न इन्तेज़ार में नींद आये 'उम्र भर
आने का 'अहद कर गये आये जो ख़्वाब में

ता = so that, 'अहद = promise

(d) क़ासिद के आते-आते ख़त इक और लिख रखूँ
मैं जानता हूँ जो वो लिखेंगे जवाब में

क़ासिद = messenger

(e) मुझ तक कब उनकी बज़्म में आता था दौर-ए-जाम
साक़ी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में

बज़्म = meeting/ "मेहफ़िल" , साक़ी = bar tender

(f) जो मुन्किर-ए-वफ़ा हो फ़रेब उस पे क्या चले ?
क्यूँ बद्गुमाँ हूँ दोस्त से दुश्मन के बाब में ?

मुन्किर-ए-वफ़ा = one who denies loyalty, फ़रेब = illusion/fraud, बद्गुमाँ = suspicious,
बाब = company

(g) मैं मुज़्तरिब हूँ वस्ल में ख़ौफ़-ए-रक़ीब से
डाला है तुमको वेहम ने किस पेच-ओ-ताब में

मुज़्तरिब = anxious/disturbed, वस्ल = meeting with the lover, ख़ौफ़ = fear, रक़ीब = opponent,
पेच-ओ-ताब = predicament

(h) मय और हज़'ज़-ए-वस्ल, ख़ुदा-साज़ बात है
जाँ नज़्र देनी भूल गया इज़्तिराब में

मय = bar, हज़'ज़-ए-वस्ल = joy of meeting, ख़ुदा-साज़ = god's gift, इज़्तिराब = anxiety

(i) है तेवरी चढ़ी हुई अन्दर नक़ाब के
है इक शिकन पड़ी हुई तर्फ़-ए-नक़ाब में

शिकन = wrinkle, तर्फ़ = eyelid

(j) लाखों लगाव, इक चुराना निगाह का
लाखों बनाव, इक बिगाड़ना इताब में

इताब = anger

(k) वो नाला-दिल में ख़स के बराबर जगह न पाये
जिस नाले से शिगाफ़ पड़े आफ़्ताब में

नाला-दिल = crying heart, ख़स = hay/grass, शिगाफ़ = crack, आफ़्ताब = sun/face

(l) वो सेहर मुद्दा तल्बी में न काम आये
जिस सेहर से सफ़िना रवाँ हो सराब में

सेहर = magic, मुद्दा तल्बी = fulfillment of a desire, सफ़िना = boat, रवाँ = move, सराब = mirage

6. (a) दिल से तेरी निगाह जिगर तक उतर गयी
दोनों को इक अदा में रज़ामन्द कर गयी

(b) शक़ हो गया है सीना, ख़ुशी लज़्ज़त-ए-फ़िराक़
तक्लीफ़-ए-पर्दादारी-ए-ज़ख़्म-ए-जिगर गयी

शक़ = crack/split, फ़िराक़ = separation, पर्दादारी = to hide, esp. fault

(c) वो बादा-ए-शबाना की सर मस्तियाँ कहाँ ?
उठिये बस अब कि लज़्ज़त-ए-ख़्वाब-ए-सहर गयी

बादा = wine, शबाना = night, सहर = morning

(d) उड़ती फ़िरे है ख़ाक मेरी कू-ए-यार से
बारे अब 'ए हवा, हवस-ए-बाल-ओ-पर गयी

बारे = at last, कू-ए-यार = lover's street

(e) देखूँ तो दिल-फ़रेबी-ए-अन्दाज़-ए-नक़्श-ए-पा
मौज-ए-ख़िराम-ए-यार भी क्या गुल कतर गयी

दिल-फ़रेब = heart alluring, नक़्श = copy/print, पा = leg, मौज = wave/enjoyment,
ख़िराम = speed

(f) हर बुलहवस ने हुस्न-परस्ती शिआर की
अब आबरू-ए-शेवा-ए-'एहल-ए-नज़र गयी

बुलहवस = greedy, हुस्न-परस्ती = to appreciate beauty, शिआर = habit, आबरू = respect/honour,
शेवा = manner/habit

(g) नज़ारे ने भी काम किया वाँ नक़ाब का
मस्ती से हर निगाह तेरे रुख़ पर बिखर गयी

(h) फ़र्दा-ओ-दी का तफ़र्क़ा यक बार मिट गया
कल तुम गये के हम पे क़यामत गुज़र गयी

फ़र्दा = yesterday, दी = tomorrow, तफ़र्क़ा = difference

(i) मारा ज़माने ने "असदुल्लाह ख़ाँ" तुम्हें
वो वल्वले कहाँ, वो जवानी किधर गयी ?

वल्वले = enthusiasm

---

7. (a) मिलती है ख़ू-ए-यार से नार इल्तिहाब में
काफ़िर हूँ गर न मिलती हो राहत 'अज़ाब में

ख़ू-ए-यार = lover's nature/behavior/habit, नार = fire, इल्तिहाब = flame, 'अज़ाब = sorrow

(b) कब से हूँ, क्या बताऊँ जहान-ए-ख़राब में ?
शब हाये हिज्र को भी रखूँ गर हिसाब में

जहान-ए-ख़राब = world of problems, शब = night, हिज्र = separation

(d) आगही दाम-ए-शुनीदन जिस क़दर चाहे बिछाये
मुद्द'आ 'अनक़ा है अपने आलम-ए-तक़रीर का

आगही = knowledge/intution, दाम = net/trap, शुनीद = conversation, 'अनक़ा = rare,
आलम = world/universe, तक़रीर = speech/discourse

(e) बस के हूँ "ग़ालिब" असीरी में भी आतिश ज़ेर-ए-पा
मू-ए-आतिश-दीदा है हल्क़ा मेरी ज़न्जीर का

असीरी = imprisonment/captivity, ज़ेर-ए-पा = under the feet, मू = hair,
आतिश-दीदा = roasted on fire, हल्क़ा = ring/circle

---

5. (a) कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाये है मुझसे
जफ़ायें करके अपनी याद शर्मा जाये है मुझसे

जफ़ायें = opression/tyranny of a beloved

(b) ख़ुदाया ! जज़्बा-ए-दिल की मगर तासीर उल्टी है
कि जितना खींचता हूँ और खिंचता जाये है मुझसे

जज़्बा-ए-दिल = emotions, तासीर = impression

(c) वो बद-ख़ू और मेरी दास्तन-ए-इश्क़ तुलानी
इबारत मुख़्तसर, क़ासिद भी घबरा जाये है मुझसे

बद-ख़ू = bad habits, तुलानी = long, इबारत = diction/ admonishing,
मुख़्तसर = concise, क़ासिद = messenger

(d) उधर वो बद-गुमानी है, इधर ये नातवानी है
न पूछा जाये है उस'से, न बोला जाये है मुझसे

बद्गुमानी = suspicion, नातवानी = weakness

(e) सम्भलने दे मुझे 'ए ना-उम्मीदी क्या क़यामत है
कि दामन-ए-ख़याल-ए-यार छूटा जाये है मुझसे

(f) तकल्लुफ़ बर्तरफ़ नज़ारगी में भी सही, लेकिन
वो देखा जाये, कब ये ज़ुल्म देखा जाये है मुझसे

तक़ल्लुफ़ = hesitation/formality, बर्तरफ़ = suspend

(g) हुए हैं पाँव ही पहले नबर्द-ए-इश्क़ में ज़ख़्मी
न भागा जाये है मुझसे, न ठेहरा जाये है मुझसे

नबर्द-ए-इशक़ = struggle in love

(h) क़यामत है के होवे मुद्दई का हम-सफ़र "ग़ालिब"
वो काफ़िर, जो ख़ुदा को भी न सौंपा जाये है मुझसे

---

3. (a) ग़ैर लें महफ़िल में बोसे जाम के
हम रहें यूँ तिश्ना-लब पैग़ाम के

बोसा = kiss, तिश्ना = thirsty

(b) ख़स्तगी का तुमसे क्या शिक्वा कि ये
हथकंडे हैं चर्ख़-ए-नीली-फ़ाम के

ख़स्तगी = injury/sickness, शिक्वा = complaint, हथकंडे = tactics, चर्ख़ = sky,
नीली-फ़ाम = blue colour/ complexion

(c) ख़त लिखेंगे गर्चे मतलब कुछ न हो
हम तो आशिक़ हैं तुम्हारे नाम के

(d) रात पी ज़मज़म पे मय और सुभ-दम
धोये धब'बे जाम-ए-'एहराम के

ज़मज़म = a well in Kabaa whose water is considered holy, मय = wine, सुभ-दम = at dawn,
'एहराम = dress for 'haj'

(e) दिल को आँखों ने फ़साया क्या मगर
ये भी हल्क़े हैं तुम्हारे दाम के

हल्क़ा = ring/circle, दाम = net/trap

(f) शाह के हैं ग़ुस्ल-ए-सेहत को ख़बर
देखिये कब दिन फ़िरें हम्माम के

ग़ुस्ल = bath, सेहत = health, हम्माम = a hot bath where a masseur gives massage and bath

(g) इश्क़ ने "ग़ालिब" निकम्मा कर दिया
वर्ना हम भी आदमी थे काम के

---

4. (a) नक़्श फ़रियादी है किसकी शोख़ी-ए-तेहरीर का
काग़ज़ी है पैराहन हर पैकर-ए-तस्वीर का

नक़्श = copy/print, फ़रियाद = complaint, तेहरीर = hand writing, काग़ज़ी = delicate,
पैराहन = dress, पैकर = appearance

(b) कावे-कावे सख़्त-जानी हाय तन्हाई न पूछ
सुबह करना शाम का लाना है जू-ए-शीर का

कावे-कावे = hard work, सख़्त-जानी = tough life, जू = canal/stream, शीर = milk,
जू-ए-शीर = to create a canal of milk, here means to perform an impossible task

(c) जज़्बा-ए-बे-इख़्तियार-ए-शौक़ देखा चाहिये
सीना-ए-शमशीर से बाहर है दम शमशीर का

इख़्तियार = authority/power, शमशीर = sword

(j) हुआ है शाह का मुसाहिब, फ़िरे है इतराता
वर्ना शेहर में "ग़ालिब" की आबरू क्या है ?

मुसाहिब = comrade/associate

---

2. (a) हुस्न-ए-मह, गर्चे बा-हंगाम-ए-कमाल अच्छा है
उस'से मेरा मह-ए-ख़ुर्शीद-ए-जमाल अच्छा है

मह = moon, ख़ुर्शीद = sun, jmAl = beauty

(b) बोसा देते नहीं और दिल पे है हर लहज़ा निगाह
जी में कहते हैं, मुफ़्त आये तो माल अच्छा है

बोसा = kiss

(c) और बाज़ार से ले आये अगर टूट गया
साग़र-ए-जम से मेरा जाम-ए-सिफ़ाल अच्छा है

साग़र-ए-जम = Badshah Jamshed's cup, जाम-ए-सिफ़ाल = clay cup

(d) बे-तलब दें तो मज़ा उसमें सिवा मिलता है
वो गदा जिसको न हो ख़ू-ए-सवाल अच्छा है

बे-तलब = without any enquiry, गदा = beggar, ख़ू = habit

(e) उनके देखे से जो आ जाती है मुँह पर रौनक़
वो समझते हैं के बीमार का हाल अच्छा है

(f) देखिये पाते हैं उश्शाक़ बुतों से क्या फ़ैज़ ?
इक बिराहमण ने कहा है, के ये साल अच्छा है

उश्शाक़ = lovers, फ़ैज़ = profit

(g) हम-सुख़न तेशे ने फ़र्हाद को शीरीं से किया
जिस तरह का भी किसी में हो कमाल अच्छा है

हम-सुख़न = together, तेशा = axe

(h) क़त्रा दरिया में जो मिल जाये तो दरिया हो जाये
काम अच्छा है वोह, जिसका म'आल अच्छा है

म'आल = result

(i) ख़िज्र सुल्ताँ को रखे ख़ालिक़-ए-अक्बर सर-सब्ज़
शाह के बाग़ में ये ताज़ा निहाल अच्छा है

ख़िज्र सुल्ताँ = one of Badshah Zafar's son, ख़ालिक़ = The Creator/God,
अक्बर = greatest, सर-सब्ज़ = fertile, निहाल = tree

(j) हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन
दिल के ख़ुश रखने को, "ग़ालिब" ये ख़याल अच्छा है

GHALIB - GHAZALS ग़ालिब की शायरी

1. (a) हर एक बात पे कहते हो तुम के "तू क्या है" ?
तुम्हीं कहो के ये अन्दाज़-ए-गुफ़्तगू क्या है ?

गुफ़्तगू = conversation

(b) न शोले में ये करिश्मा न बर्क़ में ये अदा
कोई बताओ कि वो शोख़-ए-तुन्द-ख़ू क्या है ?

बर्क़ = lightning, तुन्द = sharp/angry, ख़ू = behavior

(c) ये रश्क है कि वो होता है हम-सुख़न तुमसे
वर्ना ख़ौफ़-ए-बद-आमोज़ि-ए-अदू क्या है ?

रश्क = jealousy, हम-सुख़न = to speak together/to agree, ख़ौफ़ = fear, बद = bad/wicked,
आमोज़ी = education/teaching, अदू = enemy

(d) चिपक रहा है बदन पर लहू से पैराहन
हमारी जेब को अब हाजत-ए-रफ़ू क्या है ?

पैराहन = shirt/robe/cloth, हाजत = need/necessity, रफ़ू = mending/darning

(e) जला है जिस्म जहाँ दिल भी जल गया होगा
कुरेदते हो जो अब राख, जुस्तजू क्या है ?

जुस्तजू = desire

(f) रगों में दौड़ते फ़िरने के हम नहीं क़ायल
जब आँख ही से न टप्का तो फ़िर लहू क्या है ?

(g) वो चीज़ जिसके लिये हमको हो बहिश्त अज़ीज़
सिवाय बादा-ए-गुल-फ़ाम-ए-मुश्कबू क्या है ?

बहिश्त (or बिहिश्त , both are correct) = heaven, बादा = wine,
गुल-फ़ाम = delicate and fragrant like flowers, मुश्कबू = like the smell of musk

(h) पियूँ शराब अगर ख़ुम भी देख लूँ दो चार
ये शीशा-ओ-क़दह-ओ-कूज़ा-ओ-सुबू क्या है ?

ख़ुम = wine barrel, क़दह = goblet, कूज़-ओ-सुबू = wine pitcher

(i) रही न ताक़त-ए-गुफ़्तार, और अगर हो भी
तो किस उम्मीद पे कहिये के आरज़ू क्या है ?

गुफ़्तार = speech/discourse

authorities, mainly with the purpose of proving that he had not supported the insurrections. Although his life and immediate possesions were spared, little value was attached to his writings; he was flatly told that he was still suspected of having had loyalties toward the Moghul king. During the ensuing years, his main source of income continued to be the stipend he got from the Nawab of Rampur. "Ud-i-Hindi", the first collection of his letters, was published in October 1868. Ghalib died a few months later, on February 15th, 1869.

Ghalib had many attitudes toward the British, most of them complicated and quite contradictory. His diary of 1857, the "Dast-Ambooh" is a pro-British document, criticizing the British here and there for excessively harsh rule but expressing, on the whole, horror at the tactics of the resistance forces. His letters, however, are some of the most graphic and vivid accounts of British violence that we possess. We also know that "Dast-Ambooh" was always meant to be a document that Ghalib would make public, not only to the Indian Press but specifically to the British authorities. And he even wanted to send a copy of it to Queen Victoria. His letters, are to the contr ary, written to people he trusted very much, people who were his friends and would not divulge their contents to the British authorities. As Imtiyaz Ali Arshi has shown (at least to my satisfaction), whenever Ghalib feared the intimate, anti-British contents of his letters might not remain private, he requested their destruction, as he did in th case of the Nawab of Rampur. I think it is reasonable to conjecture that the diary, the "Dast-Ambooh", is a document put together by a frightened man who was looking for avenues of safety and forging versions of his own experience in order to please his oppressors, whereas the letters, those private documents of one-to-one intimacy, are more real in the expression of what Ghalib was in fact feeling at the time. And what he was feeling, according to the letters, was horror at the wholesale violence practised by the British.

Yet, matters are not so simple as that either. We cannot explain things away in terms of altogether honest letters and an altogether dishonest diary. Human and intellectual responses are more complex. The fact that Ghalib, like many other Indians at the time, admired British, and therfore Western, rationalism as expressed in constitutional law, city planning and more. His trip to Calcutta (1828-29) had done much to convince him of the immediate values of Western pragmatism. This immensely curious and human man from the narrow streets of a decaying Delhi, had suddenly been flung into the broad, well-planned avenues of 1828 Calcutta – from the aging Moghul capital to the new, prosperous and clean capital of the rising British power, and , given the precociousness of his mind, he had not only walked on clean streets, but had also asked the fundamental questions about the sort of mind that planned that sort of city. In short, he was impressed by much that was British.

In Calcutta he saw cleanliness, good city planning, prosperity. He was fascinated by the quality of the Western mind which was rational and could conceive of constitutional government, republicanism, skepticism. The Western mind was attractive particularly to one who, although fully imbued with his feudal and Muslim background, was also attracted by wider intelligence like the one that Western scientific thought offered: good rationalism promised to be good government. The sense that this very rationalism, the very mind that had planned the first modern city in India, was also in the service of a brutral and brutalizing mercantile ethic which was to produce not a humane society but an empire, began to come to Ghalib only when the onslaught of 1857 caught up with the Delhi of his own friends. Whatever admiration he had ever felt for the British was seriously brought into question by the events of that year, more particularly by the merciless-ness of the British in their dealings with those who participated in or sympathized with the Revolt. This is no place to go into the details of the massacre; I will refer here only to the recent researches of Dr. Ashraf (Ashraf, K.M., "Ghalib & The Revolt of 1857", in Rebellion 1857, ed., P.C. Joshi, 1957), in India, which prove that at least 27,000 persons were hanged during the summer of that one year, and Ghalib witnessed it all. It was obviously impossible for him to reconcile this conduct with whatever humanity and progressive ideals he had ever expected the British to have possessed. His letters tell of his terrible dissatisfaction.

Ghalib's ambivalence toward the British possibly represents a characteristic dilemma of the Indian — indeed, the Asian – people. Whereas they are fascinated by the liberalism of the Western mind and virtually seduced by the possibility that Western science and technology might be the answer to poverty and other problems of their material existence, they feel a very deep repugnance for forms and intensities of violence which are also peculiarly Western. Ghalib was probably not as fully aware of his dilemma as the intellectuals of today might be; to assign such awareness to a mid-nineteenth-century mind would be to violate it by denying the very terms – which means limitations –, as well – of its existence. His bewilderment at the extent of the destruction caused by the very people of whose humanity he had been convinced can , however, be understood in terms of this basic ambivalence.

The years between 1857 and 1869 were neither happy nor very eventful ones for Ghalib. During the revolt itself, Ghalib remained pretty much confined to his house, undoubtedly frightened by the wholesale masacres in the city. Many of his friends were hanged, deprived of their fortunes, exiled from the city, or detained in jails. By October 1858, he had completed his diary of the Revolt, the "Dast-Ambooh", published it, and presented copies of it to the British

consisting mainly of petitions to patrons and government, including the British. Although very different in style and procedure, Ghalib's obsession with material means, and the accompanying sense of personal insecurity which seems to threaten the very basis of selfhood, reminds one of Bauldeaire. There is, through the years, the same self-absorption, the same overpowering sense of terror which comes from the necessities of one's own creativity and intelligence, the same illusion – never really believed viscerrally – that if one could be released from need one could perhaps become a better artist. There is same flood of complaints, and finally the same triumph of a self which is at once morbid, elegant, highly creative, and almost doomed to realize the terms not only of its desperation but also its distinction.

Ghalib was never really a part of the court except in its very last years, and even then with ambivalence on both sides . There was no love lost between Ghalib himself and Zauq, the king's tutor in the writing of poetry; and if their mutual dislike was not often openly expressed, it was a matter of prudence only. There is reason to believe that Bahadur Shah Zafar, the last Moghul king, and himself a poet of considerable merit, did not much care for Ghalib's style of poetry or life. There is also reason to believe that Ghalib not only regarded his own necessary subservient conduct in relation to the king as humiliating but he also considered the Moghul court as a redundant institution. Nor was he well-known for admiring the king's verses. However, after Zauq's death Ghalib did gain an appiontment as the king's advisor on matters of versifiaction. He was also appointed, by royal order, to write the official history of the Moghul dynasty, a project which was to be titled "Partavistan" and to fill two volumes. The one volume "Mehr-e-NeemRoz", which Ghalib completed is an indifferent work, and the second volume was never completed, supposedly because of the great disturbances caused by the Revolt of 1857 and the consequent termination of the Moghul rule. Possibly Ghalib's own lack of interest in the later Moghul kings had something to do with it.

The only favouarble result of his connection with the court between 1847 and 1857 was that he resumed writing in Urdu with a frequency not experienced since the early 1820's. Many of these new poems are not panegyrics, or occasional verses to celebrate this or that. He did, however, write many ghazals which are of the same excellence and temper as his early great work. Infact, it is astonis hing that a man who had more or less given up writing in Urdu thirty years before should, in a totally different time and circumstance, produce work that is, on the whole, neither worse nor better than his earlier work. One wonders just how many great poems were permanently lost to Urdu when Ghalib chose to turn to Persian instead.

In its material dimensions, Ghalib's life never really took root and remained always curiously unfinished. In a society where almost everybody seems to have a house of his own, Ghalib never had one and always rented one or accepted the use of one from a patron. He never had books of his own, usually reading borrowed ones. He had no children; the ones he had, died in infancy, and he later adopted the two children of Arif, his wife's nephew who died young in 1852. Ghalib's one wish, perhaps as strong as the wish to be a great poet, that he should have a regular, secure income, never materialized. His brother Yusuf, went mad in 1826, and died, still mad, in that year of all misfortunes, 1857. His relations with his wife were, at best, tentative, obscure and indifferent. Given the social structure of mid-nineteenth-century Muslim India, it is, of course, inconceivable that *any* marriage could have even begun to satisfy the moral and intellectual intensities that Ghalib required from his relationships; given that social order, however, he could not conceive that his marriage could serve that function. And one has to confront the fact that the child never died who, deprived of the security of having a father in a male-oriented society, had had looked for material but also moral certainities – not certitudes, but certainities, something that he can stake his life on. So, when reading his poetry it must be remembered that it is the poetry of more than usually vulnerable existence.

It is difficult to say precisely what Ghalib's attitude was toward the British conquest of India. The evidence is not only contradictory but also incomplete. First of all, one has to realize that nationalism as we know it today was simply non-existent in nineteenth-century India. Second –one has to remember – no matter how offensive it is to some – that even prior to the British, India had a long history of invaders who created empires which were eventu ally considered legitimate. The Moghuls themselves were such invaders. Given these two facts, it would be unreasonable to expect Ghalib to have a clear ideological response to the British invasion. There is also evidence, quite clearly deducible from his letters, that Ghalib was aware, on the one hand, of the redundancy, the intrigues, the sheer poverty of sophistication and intellectual potential, and the lack of humane responses from the Moghul court, and, on the other, of the powers of rationalism and scientific progress of the West.

GHALIB - INTRODUCTION

Mirza Asadullah Beg Khan – known to posterity as Ghalib, a 'nom de plume' he adopted in the tradition of all clasical Urdu poets, was born in the city of Agra, of parents with Turkish aristocratic ancestry, probably on December 27th, 1797. As to the precise date, Imtiyaz Ali Arshi has conjectured, on the basis of Ghalib's horoscope, that the poet might have been born a month later, in January 1798.

Both his father and uncle died while he was still young, and he spent a good part of his early boyhood with his mother's family. This, of course, began a psychology of ambivalences for him. On the one hand, he grew up relatively free of any oppressive dominance by adult, male-dominant figures. This, it seems to me, accounts for at least some of the independent spirit he showed from very early child hood. On the other hand, this placed him in the humiliating situation of being socially and economically dependent on maternal grandparents, giving him, one can surmise, a sense that whatever worldly goods he received were a matter of charity and not legitimately his. His pre occupation in later life with finding secure, legitimate, and comfortable means of livelihood can be perhaps at least partially understood in terms of this early uncertainity.

The question of Ghalib's early education has often confused Urdu scholars. Although any record of his formal education that might exist is extremely scanty, it is also true that Ghalib's circle of friends in Delhi included some of the most eminent minds of his time. There is, finally, irrevocably, the evidence of his writings, in verse as well as in prose, which are distinguished not only by creative excellence but also by the great knowledge of philosophy, ethics, theology, classical literature, grammar, and history that they reflect. I think it is reasonable to believe that Mulla Abdussamad Harmuzd – the man who was supposedly Ghalib's tutor, whom Ghalib mentions at times with great affection and respect, but whose very existence he denies – was, in fact, a real person and an actual tutor of Ghalib when Ghalib was a young boy in Agra. Harmuzd was a Zoroastrian from Iran, converted to Islam, and a devoted scholar of literature, language, and religions. He lived in anonymity in Agra while tutoring Ghalib, among others.

In or around 1810, two events of great importance occured in Ghalib's life: he was married to a well-to-do, educated family of nobles, and he left for Delhi. One must remember that Ghalib was only thirteen at the time. It is impossible to say when Ghalib started writing poetry. Perhaps it was as early as his seventh or eight years. On the other hand, there is evidence that most of what we know as his complete works were substantially completed by 1816, when he was 19 years old, and six years after he first came to Delhi. We are obviously dealing with a man whose maturation was both early and rapid. We can safely conjecture that the migration from Agra, which had once been a capital but was now one of the many important but declining cities, to Delhi, its grandeur kept intact by the existence of the moghul court, was an important event in the life of this thirteen year old, newly married poet who desparately needed material security, who was beginning to take his career in letters seriously, and who was soon to be recognized as a genius, if not by the court, at least some of his most important comtemporaries. As for the marriage, in the predomin- antly male-oriented society of Muslim India no one could expect Ghalib to take that event terribly seriously, and he didn't. The period did, however mark the beginnings of concern with material advancement that was to obsess him for the rest of his life.

In Delhi Ghalib lived a life of comfort, though he did not find immediate or great success. He wrote first in a style at once detached, obscure , and pedantic, but soon thereafter he adopted the fastidious, personal, complexly moral idiom which we now know as his mature style. It is astonishing that he should have gone from sheer precocity to the extremes of verbal ingenuity and obscurity, to a style which, next to Meer's, is the most important and comprehensive styles of the ghazal in the Urdu language before he was even twenty.

The course of his life from 1821 onward is easier to trace. His interest began to shift decisively away from Urdu poetry to Persian during the 1820's, and he soon abandoned writing in Urdu almost altogether, except whenever a new edition of his works was forthcoming and he was inclined to make changes, deletions, or additions to his already existing opus. This remained the pattern of his work until 1847, the year in which he gained direct access to the Moghul court. I think it is safe to say that throughout these years Ghalib was mainly occupied with the composition of the Persian verse, with the preparation of occasional editions of his Urdu works which remained essentially the same in content, and with various intricate and exhausting proceedings undertaken with a view to improving his financial situation, these last

From: hwhfac@umiami.ir.miami.edu
Subject: Collection of Ghalib' Ghazals
Date: 27 Oct 93 15:58:03 EDT

Hello fellow netters,

Here is a excellent work of Ghalib's Ghazals compiled by Mr. Prakash. I am posting the same for the benefit of the netters. Let's congratulate Mr. Prakash on the completion of this work which has taken considerable effort and time of his. I sincerely hope that many people will like it and I wish to congratulate and thank Mr. Prakash for his effort.

Thanx,

Waheed.

Dear Waheed,

Following is the completed compilation of Ghalib's ghazals. It took me a lot longer than I anticipated to complete the work. I will very much appreciate if you can post it on the nets on my behalf so that other ghazals lovers can enjoy it. I must thank you for your cooperation during the preparation of this document.

With Regards,
-Prakash

Dear Friends,

Here is a compilation of about 35 famous ghazals of Ghalib, along with the meanings of difficult urdu words. I have also included a short version of Ghalib's life story, provided to me by Rajiv Chakravarti of University of Texas. I would like to thank Rajiv for his suggestions and comments during the transliteration of the ghazals.

हैं और भी दुनिया में सुख़नवर बोहोत अच्छे
कहते हैं कि "ग़ालिब" का है अन्दाज़-ए-बयाँ और

Enjoy !

-Prakash

P.N.Prakash
Physics Division,
Argonne National Lab,
Argonne, IL 60439

e-mail : Prakash@anlphy.phy.anl.gov